

गो०, धन०, पञ्च०, भूमि०, मार्ग०, रात्रि०. — 2) रत्निका f. = रत्न 2) c): अनेन विधिना यस्तु रत्निकावन्धमाचरेत् । स सर्वदोषरहितः सुखं संवत्सरं वसेत् ॥ HARIBHAKTIVILĀSA 31 im ÇKDr.

रत्नकाम्बा (रत्नक + अ०) f. N. pr. eines Frauenzimmers HALL 203.

रत्नण (von 1. रत्न्) 1) nom. ag. Beschützer, Hüter: Vishnu MBH. 13, 7048. — 2) f. आ das Beschützen, Hüten: प्रीयसे रत्नणाभिः ÇĀk. 103, v. 1. आत्म० PAÑĀKĀR. 1, 14, 107. — 3) f. ई Zügel VARĀ. bei MALLIN. zu Çiç. 3, 56.

— 4) n. proparox. das Bewachen, Schützen, Behüten, Bewahren, Schutz: रत्ना षो अग्रै तव रत्नणोभिः RV. 4, 3, 14. sg. M. 8, 39, 305. 10, 80. 11, 235. JĀĀĀ. 3, 297. MBH. 3, 5433. R. 2, 30, 28. ÇĀk. 103. Spr. 1828. BHĀG. P. 5, 24, 3. PAÑĀKĀR. 1, 2, 34. HIT. 114, 7. प्रज्ञानाम् M. 1, 89. R. GORR. 2, 43, 28. RAGH. 1, 24. Spr. 1830. दुर्बलानाम् M. 8, 172. आर्यवृत्तानाम् 9, 253. भार्यायाः MBH. 1, 1870. 6150. R. 2, 46, 9. त्रैलोक्यस्य R. 1, 1, 5. RAGH. 11, 5. ÇĀk. 27, 5. PAÑĀKĀR. 1, 7, 72. HIT. 13, 13. पशूनाम् das Hüten des Viehes M. 1, 90. 8, 410. 9, 326. योषिताम् 16. कुमारणाम् 7, 152. स्वस्थस्य SUÇR. 1, 3, 6. 122, 4. वाजिनाम् Pflege der Pferde VARĀH. BRH. S. 86, 33. das obj. im loc.: वशापुत्राम् चैव स्वाद्रत्नणं निष्कुलाम् च । पतिव्रतासु च स्त्रीषु M. 8, 28. im comp vorangehend: अखिललोकं BHĀG. P. 4, 20, 13. कुलं R. 2, 68, 22. वर्षाश्रमं RAGH. 14, 67. LA. (III) 88, 9. व्याधितं SUÇR. 1, 124, 4. गोविप्रं BHĀG. P. 7, 11, 24. कामतुरंगं RAGH. 3, 38. जीवितं KATHĀS. 61, 75. — उपार्जितानामर्थीनां त्याग एव हि रत्नणम् Spr. 499. एतदेव हि पाण्डित्यं यत्स्वत्पाद्भूरत्नणम् 1503. मानं R. 6, 100, 13. eine prophylaktische Cerimonie MĀRK. P. 31, 38. — Vgl. अग्नि०, अङ्ग०, गर्भ०, पाद०, पृष्ठ०.

रत्नपारक m. Harnverhaltung ÇABDAR. im ÇKDr. रत्नपारक v. 1.

रत्नणि (von 1. रत्न्) f. eine best. Pflanze, = त्रायमाणा RĀĀN. im ÇKDr.

रत्नणीय (wie oben) adj. zu beschützen, zu behüten: भर्तव्या रत्नणीया च पत्नी हि पतिना सदा MBH. 3, 2734. HARIV. 10951. MĀLAV. 33, 13. Spr. 2420. KATHĀS. 18, 337. 28, 134. HIT. 107, 9. रत्नणीया विशेषेण परदारं महोभूताम् R. 3, 36, 14. न यस्य वधो न च रत्नणीयः BHĀG. P. 8, 5, 22. PAÑĀKĀT. 83, 7. 211, 20. पुत्रो ऽयं भवता नकुलाद्रत्नणीयः 238, 18. इदं राष्ट्रम् KATHĀS. 12, 39. तेजसु RAGH. 14, 61. कन्था PAÑĀKĀT. 34, 23. रत्नणीयात्परन्दाणाम् — कोशलान् verdienen beherrscht zu werden R. 2, 30, 10. zu vermeiden, wovor man sich zu hüten hat: स्त्रीवैरम् KATHĀS. 13, 134. तैलविन्दुनिपातश्च रत्नणीयस्त्वया 27, 44.

रत्नणीरक s. रत्नपारक.

रत्नपाल m. Hüter, Wächter PAÑĀKĀT. 217, 4. 232, 2. क m. dass. WEBER, KRSHNĀG. 269.

रत्नपुरुष PAÑĀKĀT. ed. orn. 4, 18 fehlerhaft für रत्नापुरुष.

रत्नभगवती f. = प्रज्ञापारमिता BURN. Intr. 31. 462. fg. रत्ना भ० Lot. de la b. l. 333.

1. रत्नम् (von 1. रत्न्) adj. hütend in पश्चि०.

2. रत्नम् (von 3. रत्न्) n. Beschädigung: मा नो रत्नो अभि नञ्चातुमावताम् RV. 7, 104, 23. मा नो रत्नं आ वैशीन्मा यातुर्यातुमावताम् 8, 49, 20. — 2) concret Beschädiger, Bez. nächtlicher Unholde, welche das Opfer stören und den Frommen schädigen, NIR. 4, 18. gaṇa भोमादि zu P. 3, 4, 74. UĀGĀL. zu UNĀDIS. 4, 188. AK. 1, 1, 1. G. 56. H. 187. HALĀJ. 1, 73. 3, 4. coll. RV. 1, 21, 5. 133, 5. शिशोति षृङ्गे रत्नसं विनिर्ले 5, 2, 9. 6, 18, 10. 7, 104, 1. 4. 13. 22. AV. 4, 17, 5. 7, 70, 2. 8, 2, 12. उन्मत्तं रत्नसुपरि 6, 111, 3.

आह्वा रत्नः संसृजतात् AIR. BR. 2, 7. plur. RV. 7, 13, 10. 38, 7. VS. 2, 23. 29. इमं रत्नं ग्रीवा अपि कृतामि 3, 22. AV. 1, 33, 2. 2, 4, 4. 12, 1, 50. 14, 2, 24. न यज्ञे रत्नं कीर्तयेत्कानि रत्नास्युत्तरता वै यज्ञः AIR. BR. 2, 7. तद्यद् रत्नं स्तस्माद्रत्नासि (vgl. R. 7, 4, 13) ÇAT. BR. 1, 1, 1, 16. 6, 1, 11. 8, 1, 16. नाष्टा रत्नासि 1, 4, 21. 2, 1, 6 (so in Buch 1—5, in den späteren रत्नासि नाष्टाः). ĀÇV. GRH. 3, 4, 1. अमुरत्नासि SHADY. BR. 1, 2. TS. 2, 4, 1, 1. 6, 3, 2. 2. 6, 3, 1. ÇAT. BR. 13, 4, 3, 10. रत्नोऽज्ञनाः GOBH. 1, 4, 18. रत्नोदेवत्य KAUC. 4. रत्नोविद्या ÇĀKĀH. ÇR. 16, 2, 19. रत्नासि M. 1, 43. 3, 170. 204. 230. 238. 4, 199. 7, 23. 38. 12, 44. BHAG. 11, 36. R. 1, 9, 49. SUÇR. 1, 71, 2. 117. 9. ÇĀk. 28, 13. पत्नरत्नः पिशाचाः M. 1, 37. 11, 95. गन्धर्वोऽर्ग रत्नसाम् 3, 196. वित्तेशो यत्नरत्नसाम् BHAG. 10, 23. 17, 4. MBH. 3, 13484. 8, 2104. R. 1, 1, 42. 33, 17. SUÇR. 1, 114, 8. VARĀH. BRH. S. 13, 11. 46, 14. 92. 31, 6. 68, 108. रत्नोणाः R. 4, 40, 37. रत्नोराव VET. in LA. (III) 4, 9. Kinder der Khasā HARIV. 234. sg. von einem einzelnen Rākshasa: ऋषिं वै रत्नो ऽग्रकृत् PAÑĀKĀV. BR. 15, 3, 20. MBH. 1, 5993. 7632. R. 1, 1, 45. VIKR. 34, 5. KATHĀS. 18, 282. रत्नोभूत 23, 274. एतच्छुक्वा गतो रत्नः प्रकृमंश्च महोवलः R. 7, 23, 1, 55. दीर्घनिष्कौ वा इदं रत्नो यज्ञहा यज्ञानवलिकृत्यचरत् PAÑĀKĀV. BR. 13, 6, 9. रत्नसु = निर्मति WEBER, RĀMAT. UP. 302. 303. डुर्नृप० ein Rakshas von einem boshafte Könige RĀĀG-TAR. 5, 416. Nach gaṇa पर्श्यादि zu P. 5, 3, 117 sind die Rakshas ein आयुधजीविसंघ. — Vgl. अ०, पुरुष०, ब्रह्म०, महा०, वि०, सह०, रात्स.

3. रत्नसु (wie oben) m. Beschädiger, Bez. der Rakshas, nächtlicher Unholde: विध्यं रत्नसुस्तर्पिष्ठैः RV. 4, 4, 1. 5, 42, 10. 2, 23, 14. बाधस्व द्विषो रत्नसो अमीवाः 3, 13, 1. 7, 1, 3. 19. वो वा रत्नाः शुचिर्स्मृत्याहं 104, 16. 8, 23, 14. 49, 10. 19. रत्ना दृच्छा चिद्रत्नसः सदासि 9, 91, 4. AV. 2, 3, 6. 4, 19, 3. 14, 2, 7. — Vgl. रात्स.

रत्नस्वै (von 2. oder 3. रत्नसु) n. Schadenfreude oder dämonische Natur: यो नः कश्चिद्विरिञ्चति रत्नस्वै न मर्त्यः RV. 8, 18, 13.

रत्नस्य० adj. anti-rakshasisch: तनू P. 4, 4, 121. TS. 2, 3, 13, 1. nach dem Schol. zu P. 4, 4, 128 मत्वर्थे.

रत्नस्विन् adj. unhold, rakshasisch RV. 1, 12, 5. 36, 20. दुःशंसं मर्त्यं डुर्विदासं रत्नस्विन्म् 7, 94, 12. 8, 22, 18. 47, 12. 49, 8. 20. वि मृषो ऽहं रत्नस्विनीः AV. 6, 2, 2. 7, 114, 2.

रत्नःसभम् (2. रत्नसु + सभा) n. eine Menge von Rākshasa AK. 3, 6, 3, 27.

1. रत्ना (von 1. रत्न्) f. s. u. रत्न.

2. रत्ना f. = रत्ना, लाता LACK MED. sh. 23.

रत्नाकरण्डक (1. र० + क०) n. ein Amulet in Form eines Körbchens ÇĀk. 103, 12 (im Prākrit).

रत्नागृह (1. र० + गृह) n. das Gemach einer Wöchnerin (Schutzgemach gegen Unholde u. s. w.) RAGH. 10, 69.

रत्नाधिकृत (1. रत्ना + अ०) adj. mit dem Schutz (des Landes, des Ortes) betraut: भृत्याः Spr. 4943. m. Polizeibeamter M. 9, 272.

रत्नाधिपति (1. रत्ना + अ०) m. Polizeidirector ÇĀNTIK. 24.

रत्नापति (1. र० + प०) m. dass. VARĀH. BRH. 18, 17.

रत्नापत्र (1. र० + पत्र) m. eine Art Birke, = भूर्ज RĀĀN. im ÇKDr.

रत्नापुरुष (1. र० + पुरु०) m. Wächter, Hüter PAÑĀKĀT. 8, 24. 44, 12. 192, 12. fälschlich रत्नपु० ed. orn. 4, 18.

रत्नापेक्षक m. a doorkeeper or porter; a guard of the women's apart